मत्ती 20:6

“और ग्यारहवें घंटे वह फिर बाहर गया और दूसरों को खड़े देखा,
और उनसे कहा, ‘तुम दिन भर यहाँ निष्क्रिय क्यों खड़े हो?’” (मत्ती 20:6)

प्रभु यीशु ने एक दृष्टान्त बताया जो आज परमेश्वर के कार्य — अर्थात् सुसमाचार प्रचार — की आत्मिक वास्तविकता को बहुत सजीव रूप से दर्शाता है।

वह दृष्टान्त एक गृहस्वामी के बारे में है जो सुबह बहुत जल्दी अपने दाख की बारी के लिए मजदूरों को बुलाने गया। दाख की बारी में बहुत काम था और अधिक लोगों की आवश्यकता थी।

वह प्रभात में गया, कुछ मजदूर पाए और उन्हें दाख की बारी में भेज दिया। फिर तीसरे घंटे गया, और अन्य बेरोज़गार लोगों को देखा और उन्हें भी भेजा। इसी तरह वह छठे और नौवें घंटे भी गया।
फिर ग्यारहवें घंटे, जब दिन लगभग समाप्त होने को था, वह फिर गया और कुछ लोगों को खड़े देखा जो सुबह से शाम तक कुछ नहीं कर रहे थे

— वे “निष्क्रिय” थे।
उसने उनसे कहा, “तुम दिन भर यहाँ बिना काम क्यों खड़े हो?”

मत्ती 20:1–7

[1] क्योंकि स्वर्ग का राज्य उस गृहस्वामी के समान है जो
सुबह जल्दी उठा ताकि अपने दाख की बारी के लिए मजदूरों को नियुक्त करे।
[2] और जब वह मजदूरों से एक दिन के लिए एक दीनार पर सहमत हुआ, तो उन्हें दाख की बारी में भेज दिया।
[3] वह तीसरे घंटे फिर बाहर गया और अन्य लोगों को बाज़ार में खाली खड़े देखा।
[4] उसने उनसे कहा, “तुम भी मेरी दाख की बारी में जाओ, जो उचित होगा वह मैं तुम्हें दूँगा।”
[5] वह छठे और नौवें घंटे फिर गया और वही किया।
[6] और ग्यारहवें घंटे वह फिर गया, और कुछ अन्य लोगों को खड़े देखा, और उनसे कहा, “तुम दिन भर यहाँ बिना काम क्यों खड़े हो?”
[7] उन्होंने उससे कहा, “क्योंकि किसी ने हमें काम पर नहीं रखा।” उसने उनसे कहा, “तुम भी मेरी दाख की बारी में जाओ।”

□□□□ □□ □□ ‘□□□□□□□□□ □□□□’ □□ □□□□□ □□□□ □□□?

□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ —
□□ □□□□ □□□ □□ “□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□” — □□ □□□□□□ □□□□□
□□ □□□□□ □□□
□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□
□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□, □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □ □□ □□□ □□□

□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

1□ □□□□ □□□□ □□ □□

□□□□ □□□ □□□□ □□□, “□□□ □□□□ □□ □□□□… □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□
□□□ □□□… □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□… □□□ □□□□ □□□□ □□□…
□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□… □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□
□□□□ □□…”
□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□□□ □□□ □□ — □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□
□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□
□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□ “□□□ □□□” □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□
— □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□

□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□

> (1 □□□□□□□□□□□ 1:26–29)

2□ ‘□□□ □□□’ □□ □□□□□□□□ □□□□

□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ — □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□!
□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□, □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□
□□□ □□ □□□□ □□□ — □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□

3□ □□□□ □□ □□□□□□□□

“□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□?” — □□□ □□□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□
□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□; □□ □□□
□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□

> □□□□□□ *1:2–4*
> *[2]* □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□: □□ □□□ □□□□ □□□, ‘□□□ □□□□□
> □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□’
> *[3]* □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□,
> *[4]* “□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□
> □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□?”

□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ “□□□” □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□, □□□ □□□
□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□
□□□□□ □□□ — □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□, □□
□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□, □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□

4□ □□□□□

□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□
□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□
“□□□□ □□” □□□□

□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□

□□□ □□□□ □□ □□ — □□ □□□□ ‘□□□□□□□□□ □□□□’ □□□ □□□

□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ — □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ — □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□

□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□
□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ —
□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□! ✝

> □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ — □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□! □

□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□

इस विषय में सहायता चाहते हो, तो कृपया नीचे दिए गए संपर्क माध्यम से हमसे संपर्क करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp